



पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा प्रेरित

बाल संस्कार केन्द्र पाठ्यक्रम

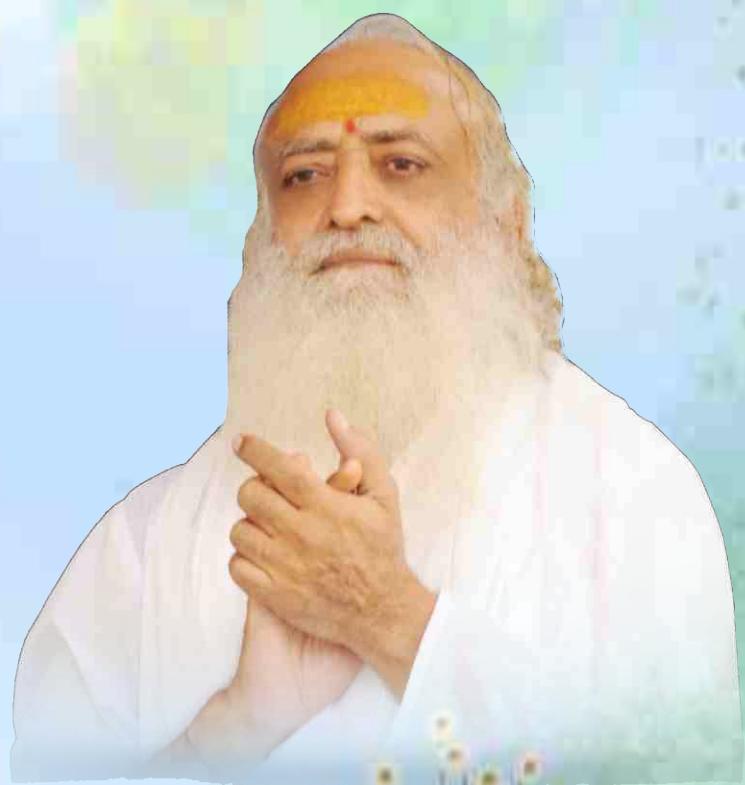


बापूजी के बच्चे ईश्वर को पानेवाले और दुनिया को हिलानेवाले ! हरि ओं... हरि ओं... हरि ओं... ।



पूज्यपाद स्वामी श्री श्री लीलाशाहजी महाराज

सद्गुरु की पूजन, सद्गुरु का आदर,
सत्यज्ञान एवं शाश्वत अनुभव का आदर
है, मुक्ति का आदर है, अपने जीवन का
आदर है । जो मनुष्य जीवन का आदर
करना नहीं जानता वह सद्गुरु का आदर
करना क्या जाने ? जो मनुष्यता की
महानता नहीं जानता है वह सद्गुरु की
महानता क्या जाने ? सद्गुरु आत्मज्ञान
के लहराते महासागर हैं और शिष्यरूपी
चन्द्र को देखकर छलकते हैं । शिष्य निर्मल
बुद्धि हो जाता है तो उसमें कोमलता आती
है । निर्मल बुद्धि और शुद्ध हृदय में वह ज्ञान
का जगमगाता प्रकाश, आनंद, नित्य नवीन रस प्रकट करने में सक्षम होता है ।



अनुक्रमणिका

लेख का नाम	पृष्ठ क्रं.
१. साधना में चार चाँद लगानेवाला	
अमृतकाल : चतुर्मास	३
२. ज्ञान के आदर का पर्व : व्यासपूर्णिमा	४
३. जय सद्गुरु देवन देव वरं...	५
४. कहानियाँ	६
* संत शिरोमणि तुलसीदासजी	
* स्वामी विवेकानंदजी की गुरुभक्ति	
* आनंद की अदृट श्रद्धा	
* अमरदासजी ने पाया अमर पद	
५. पूज्य बापूजी के जीवन प्रेरक-प्रसंग	१२
* बालक आसुमल की कैसी परहितपरायणता	
* जो मेरे प्रभु को अच्छा लगे वही करँगा	
* बचपन में ऐसी तड़प	
* संतसेवी बालक आसुमल	
६. गतिविधियाँ...	१५
* मानस पूजन ...	

* जैसा बोयेंगे वैसा पायेंगे	
* सावधानी ही साधना है	
* हमारा विराट स्वरूप	
७. यहेलियाँ	१९
८. पहेली	२०
९. प्रश्नोत्तरी	२२
१०. हँसते-खेलते पायें ज्ञान	२३
११. खेल	२४
* एकाग्रता बढ़ाओ, सफलता पाओ...	२५
* खेल-खेल में भगवन्नाम जप	
* करो विचार, बनो महान	
* हँसते-खेलते भगायें अवगुण, भरें सद्गुण...	
१२. कवितायें	२६
* हे सद्गुरु माता...	
* अपने स्वरूप को जानो	
* आपके उपकार के क्रण को	

इन तिथियों व योगों का लाभ लेना न भूलें

- ५ जुलाई : गुरुपूर्णिमा (विद्यालाभ योग केवल गुज व महाराष्ट्र में)
- १२ जुलाई : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से दोपहर ३-४९)
- १६ जुलाई : संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से सुबह १०-४८ तक)
- १८ जुलाई : चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (रात्रि १२-४२से १९ जुलाई रात्रि ९-४० तक और जप अक्षय फलदायी)
- २० जुलाई : सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से रात्रि ११-०३)
- २६ जुलाई : रविवारी सप्तमी (सुबह ९-३३ से २७ जुलाई सूर्योदय तक)

उपासना अमृत

१. साधना में चार घाँड़ लगानेवाला अमृतकाल : चतुर्मासि

(चतुर्मासि : १ जुलाई से २४ अक्टूबर)

अपना आध्यात्मिक खजाना बढ़ायें

चतुर्मास की महिमा के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ‘जैसे कि सान बोवाई करके थोड़ा आराम करता है और खेत के धन का इंतजार करता है, ऐसे ही चतुर्मास में आध्यात्मिक धन को भरने की शुरुआत होती है। हो सके तो सावन के महीने में एक समय भोजन करे, जप बढ़ा दें। हो सके तो किसी पवित्र स्थान पर अनुष्ठान करने के लिए चला जाय अथवा अपने घर में ही पूजा का कमरा बना दें। एक सुबह को नहा-धोकर ५ बजे पूजा-कमरे में चला जाय और दूसरी या तीसरी सुबह को निकले। मौन रहे, शरीर के अनुकूल फलाहार, अल्पाहार करे। अपना आध्यात्मिक खजाना बढ़ाये। ‘आदर हो गया, अनादर हो गया, स्तुति हो गयी, निंदा हो गयी... कोई बात नहीं, हम तो करोड़ काम छोड़कर प्रभु को पायेंगे।’ ऐसा दृढ़ निश्चय करे। बस, फिर तो प्रभु तुम्हारे हृदय में प्रकट होने का अवसर पैदा करेंगे।’

चतुर्मास की बड़ी भारी महिमा है, इन बातों जानकर इस अमृतकाल का लाभ उठाइये :

(१) सद्धर्म, सत्संग-श्रवण, सत्पुरुषों के या संतों के दर्शन, भगवान का पूजन आदि सत्कर्मों में संलग्न रहना और सुपात्र हेतु दान देने में अनुराग होना- ये सब बातें चतुर्मास में अत्यंत कल्याणकारी बतायी गयी हैं।

(२) इन दिनों भूमि पर (चटाई, कम्बल, चादर आदि बिछाकर) शयन, ब्रह्मचर्य-पालन, उपवास, मौन, ध्यान, जप, दान-पुण्य आदि विशेष लाभप्रद होते हैं।

(३) जल में आँवला मिलाकर स्नान करने से

पुरुष तेजवान होता है और नित्य महान पुण्य प्राप्त होता है।

(४) चतुर्मास में ताँबे के पात्र में भोजन विशेष रूप से त्याज्य है। इन दिनों धातु के पात्रों का त्याग कर पलाश के पत्तों पर भोजन करनेवाला ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है, ऐसा शास्त्र में कहा गया है।

(५) इन दिनों में परनिंदा का विशेष रूप से त्याग करें।

(६) चतुर्मास में शादी-विवाह और सकाम यज्ञ नहीं होते। ये चार मास साधन-भजन करने के हैं।

(७) पद्म पुराण में आता है कि जो व्यक्ति भगवान के शयन करने पर विशेषतः उनके नाम का कीर्तन और जप करता है, उसे कोटि गुना फल मिलता है।

(८) चतुर्मास में भगवान विष्णु के सामने खड़े होकर ‘पुरुष सूक्त’ का पाठ करने से बुद्धिशक्ति बढ़ती है।

- क्रषिप्रसाद, जुलाई २०१८

जैसा सदगुरु बतायें वैसा व्रत-नियम लेना दीक्षा है और उसके अनुसार जीवन बनाना शिक्षा है। पहले दीक्षा के बाद ही शिक्षा दी जाती थी तो शिक्षा फलीभूत होती थी और यह शिक्षा-दीक्षा मानव में से महामानव का प्राकृत्य करने का पूज्य बापूजी रखती थी।



२. ज्ञान के आधर का पर्व : व्यासपूर्णिमा - पूज्य बापूजी

(गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा : ५जुलाई)

सद्गुरु को 'व्यास' कहा जाता है। 'व्यास' का मतलब है जो हमारी बिखरी हुई ऊर्जा अथवा वृत्तियों, आकांक्षाओं या सामर्थ्य को सुव्यवस्थित करें। जैसे सूर्य की किरणें बिखरी हुई हैं तो आतिशी शीशा (magnifying glass) उनको सुव्यवस्थित करता है और दाहक शक्ति प्रकट कर देता है, ऐसे ही हममें जो योग्यताएँ बिखरी हैं उनको सुव्यवस्थित करके ठीक जगह पर उनका प्रभाव और प्रकाश कराने की व्यवस्था करने की जो क्षमता रखते हैं ऐसे महापुरुष को 'व्यास' कहा जाता है।

एकांत छोड़कर भ्रमण की क्या जरूरत ?

मेरे को किसीने पूछा : “बाबाजी ! जिसको जरूरत होगी वह घर-बार छोड़ के गिरि-गुफा में संतों के पास जा के शांति पायेगा, संतों को एकांत छोड़ने की क्या आवश्यकता ? हिमालय की गुफा, आबू की गुफा छोड़कर आप इतना धूम रहे हो, यह क्यों ? क्या जरूरत है आपको ?”

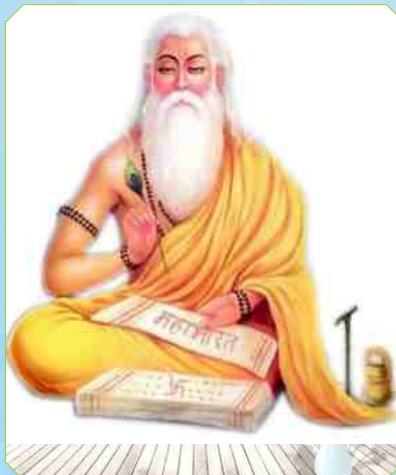
मैंने कहा : “भाई ! तुम बीमार हो तो क्या कर रोगे ?”

बोले : “डॉक्टर के पास जायेंगे ।”

मैंने कहा : “बहुत गम्भीर हालत हो जाय तो ?”

बोले : “डॉक्टर को हमारे घर बुलाया जायेगा ।”

मैंने कहा : “समाज का मन पहले इतना बीमार



नहीं था कि बस, संसार की दलदल में ही पड़ा रहे। पहले दूसरे लोग तो क्या राजा-महाराजा भी घर-बार, राजपाट छोड़ के विरक्त होकर गुरुओं के चरणों में चले जाते थे। मानवी मन पहले विषय-विकारों के रोग से इतना रोगी नहीं था इसलिए लोग समझते थे

कि ‘कितना भी मिला, आखिर क्या ?’ ‘यह मनुष्य-जीवन आत्मोद्धार के लिए मिला है, बंधनों से मुक्त होने व विकारों से ऊपर उठने के लिए मिला है।’ - ऐसा विवेक रहता था। और जीवन की शाम हो जाय उसके पहले जीवनदाता का साक्षात्कार करने के लिए मनुष्य बड़े-से-बड़ा त्याग कर लेता था। लेकिन अभी तो मन को इतना विषय-विकारों का रोग है कि संतों के पास नहीं जा पाते हैं। कलियुग के दोषों से ग्रस्त लोगों की दयनीय अवस्था से द्रवित हो के उन्हें भगवदीय ज्ञान, आनंद, शांति से तृप्त करने के लिए संत-महापुरुष एकांत, गिरि-गुफा एँ छोड़कर गाँव-गाँव, नगर-नगर और डगर-डगर धूम रहे हैं।”

प्रश्नोत्तरी : १. व्यास किसे कहते हैं ?

२. संत-महापुरुष गाँव-गाँव, नगर-नगर क्यों धूमते हैं ?

- क्रष्णप्रसाद, जून २०१७

3. जय सद्गुरु देवन देव वरं...

- पूज्य बापूजी

व्यासपूर्णिमा का पर्व मनुष्य-जाति के गर्व की खबर है, मनुष्य-जाति की महानता की खबर है। मनुष्य ईश्वर को पा सकता है, ईश्वरप्राप्त होकर पूजा जा सकता है और दूसरों का छुपा हुआ ईश्वरत्व जगा सकता है। गुरु का आदर अपनी मनुष्यता का आदर है, ज्ञान का आदर है, अपने उद्देश्य का आदर है। हमने अपने गुरुजी का आदर नहीं किया होता तो गुरुजी को क्या घाटा पड़ता? लेकिन आदर किया तो हमें पाने को बाकी क्या रहा? गुरुजी का आदर किया तो हमें ही फायदा हुआ। गुरुजी तो ऐसी जगह पर पहुँचे हैं कि आदर हो-अनादर हो, हम उनके पास जायें-न जायें गुरुजी को कोई घाटा नहीं पड़ता है परंतु हम उनके पास नहीं जाते तो हम ही घाटे में रह जाते।

श्री भोलेबाबाजी ने ऐसे ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु की स्तुति गायी है :

जय सद्गुरु देवन देव वरं, निज भक्तन रक्षण देह धरं ।
पर दुःख हरं सुख शांति करं, निरुपाधि निरामय दिव्य परं ॥

सद्गुरु दूसरों के दुःख हर लेते हैं, जीवन में सुख और शांति भर देते हैं।

हे गुरुदेव! आप कैसे हो? निरुपाधि हो, निरामय हो और दिव्य हो। 'मेरी दुकान है, मकान है, मैं फलाना हूँ...' ऐसी उपाधि में आप बँधे नहीं हो। 'मैं हूँ अपने आप, हर परिस्थिति का बाप!' ऐसी आपकी दिव्य अनुभूति है। इन आँखों से अथवा बुद्धि से आपका तोल-मोल नहीं हो सकता है। इनसे तो आपका बाहर का श्रीविग्रह ही दिखता है लेकिन आप कितने व्यापक हो, हमारी कितनी रक्षा कर रहे हो या एक साथ कितनों के चित्त में प्रेरणा करते हो, स्वप्न में आते हो इसकी गिनती कोई नहीं कर सकता। भगवान श्रीकृष्ण और राम जिस तत्त्व में रहकर जिस सहज स्वभाव में रमण करते हैं, उसी आत्मस्वभाव में आप रमण करते हैं।

जय काल अबाधित शांतिमयं...

शरीर पर काल का प्रभाव पड़ेगा, खान-पान पर, वस्तुओं पर काल का प्रभाव पड़ेगा लेकिन हे गुरुदेव! उसको जाननेवाला काल से अबाधित तत्त्व आप हो और हमको भी ऐसा बना रहे हो, यह आपकी कृपा है। इस आरती में भी साधक की कितनी उन्नति छुपी है!

जन पोषक शोषक ताप त्रयं ।

आधिदैविक ताप, आधिभौतिक ताप और आध्यात्मिक ताप - लोगों के इन तीनों तापों को आप शोषित कर आत्मज्ञान से उनको पोषित कर देते हो। शरीर से, मन से अथवा कुदरती कोप से थके-माँदे लोगों को आपके दर्शन और वाणी से तीन तापों से आराम मिलता है और उनका पोषण होता है।

भय भंजन देत परम अभयं, मन रंजन भाविक भाव प्रियं ॥

मनोरंजन करते-करते विनोद-विनोद में आ गया ज्ञान। सत्संग में पहले जब आये थे उस समय कैसी मति, कैसी गति और कैसा दिमाग था? सत्संग में आने के बाद समझ कितनी बढ़ गयी! मेहनत भी नहीं पड़ी। स्कूल, कॉलेज की पढ़ाई में तो परिश्रम पड़ता है और बाद में मिलता है कंकड़-पत्थर, सांसारिक उपलब्धि - नौकरी करो, धंधा करो, पैसे कमाओ फिर सुखी होने के लिए फर्नीचर



श्रद्धा नहीं हो तो मंत्र सफल नहीं होगा । जो मंत्र और मंत्रदाता का आदर नहीं करता उसको मंत्र फलता नहीं है।



लाओ, शादी करो, डिस्को करो, विषय-विकारों में उलझो और मरो, मरो और जन्मो, जन्मो और मरो... । गुरु के ज्ञान में तो परिश्रम भी नहीं और मिलती इतनी ऊँची समझ है कि ओहो !... सब दुःखों और सुखों के सिर पर पैर रखकर परमात्मा की प्राप्ति ! दुनिया के कितने भी प्रमाणपत्र लेकर आदमी इतना सुयोग्य, इतना महान नहीं बनता है जितना सत्संग से बनता है । दुनिया की पदवियाँ मेरे पास होतीं तो इतना नहीं मिलता जितना मेरे को गुरुजी की कृपा से, सत्संग से मिला है ।

सत्संग से तो ऐहिकलाभ के साथ-साथ स्वर्ग, अतल, वितल, तलातल, रसातल का ज्ञान, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान, सम रहने का ज्ञान आदि जितने भी ज्ञान हैं वे सारे ज्ञान, प्रकाश, आनंद और रस मुफ्त में मिलते हैं ।

भग राग गया हट द्वेष गया, अघ चूर्ण भया अणु पूर्ण भया ।

नहीं द्वैत रहा सम एक भया, भ्रम भेद मिटा मम तोर गया ॥

नहीं मैं नहीं तू नहीं अन्य रहा, गुरु शाश्वत आप अनन्य रहा ।

गुरु सेवत ते नर धन्य यहाँ, तिनको नहीं दुःख यहाँ न वहाँ ॥

हमने गुरुजी का सेवन किया, हमको इस लोक में भी दुःख नहीं और कालांतर में भी जन्म-मरण का दुःख नहीं । दुःखद अवस्थाएँ आयें, दुःखद परिस्थितियाँ आयें तो दुःखी होकर उनमें पच मरें ? नहीं, दुःख के साक्षी बनें - यह गुरु का ज्ञान हमारे साथ है । दुनिया का सारा धन एक आदमी को दे दो, सौंदर्य व सत्ता दे दो किंतु गुरु का ज्ञान नहीं है तो वह अभागा है, दुःखी होगा । और कुछ भी न हो, नरक में भेज दो परंतु ब्रह्मज्ञानी गुरु की दीक्षा और ज्ञान दे दो फिर वह नरक में भी रहेगा तो नरक स्वर्ग हो जायेगा । जिनके जीवन में गुरुज्ञान, तत्त्वज्ञान नहीं है, वे कितने ही बड़े पद पर क्यों न चले जायें, फिर भी जरा-जरा-सा दुःख उनको हिलाता रहेगा ।



- (पूज्य बापूजी के सत्संग-अमृत से संकलित)
(वर्षा क्रतु : २० जून से २१ अगस्त)

(१) वर्षा क्रतु में मंदाज्ञि वायुप्रकोप, पित्त का संचय आदि दोषों की अधिकता होती है। इस क्रतु में भोजन आवश्यकता से थोड़ा कम करेंगे तो आम (कच्चा रस) तथा वायु नहीं बनेंगे या कम बनेंगे, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। भूल से भी थोड़ा ज्यादा खाया तो ये दोष कुपित होकर बीमारी का रूप ले सकते हैं।

(२) काजू, बादाम, मावा, मिठाइयाँ भूलकर भी न खायें, इनसे बुखार और दूसरी बीमारियाँ होती हैं।

(३) अशुद्ध पानी पियेंगे तो पेचिश व और कई बीमारियाँ हो जाती हैं। अगर दस्त हो गये हों तो खिचड़ी में देशी गाय का धी डाल के खा लो तो दस्त बंद हो जाते हैं। पतले दस्त ज्यादा समय तक न रहें इसका ध्यान रखें।

(४) बरसाती मौसम के उत्तरकाल में पित्त प्रकुपित होता है इसलिए खट्टी व तीखी चीजों का सेवन वर्जित है।

(५) जिन्होंने बेपरवाही से बरसात में हवाएँ खायी हैं और शरीर भिगाया है, उनको बुढ़ापे में वायुजन्य तकलीफों के दुःखों से टकराना पड़ता है।

(६) इस क्रतु में खुले बदन घूमना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

(७) बारिश के पानी में सिर भिगाने से अभी नहीं तो २० वर्षों के बाद भी सिरदर्द की पीड़ा अथवा घुटनों का दर्द या वायु-संबंधी रोग हो सकते हैं।

(८) जो जवानी में ही धूप में सिर ढकने की सावधानी रखते हैं उनको बुढ़ापे में आँखों की तकलीफें जल्दी नहीं होतीं तथा कान, नाक आदि निरोग रहते हैं।

(९) बदहजमी के कारण अम्लपित्त



(hyperacidity) की समस्या होती है और बदहजमी से जो वायु ऊपर चढ़ती है उससे भी छाती में पीड़ा होती है। वायु और पित्त का प्रकोप होता है तो अनजान लोग उसे हृदयाघात (heart attack) मान लेते हैं, डर जाते हैं। इसमें डरें नहीं, ५० ग्राम जीरा सेंक लो व ५० ग्राम सौंफ हलकी सेंक लो तथा

२०-२५ ग्राम काला नमक लो और तीनों को कूटकर चूर्ण बना के घर में रख दो। ऐसा कुछ हो अथवा पेट भारी हो तो गुनगुने पानी से ५-७ ग्राम फाँक लो।

(१०) अनुलोम-विलोम प्राणायाम करो - दायें नथुने से श्वास लो, बायें से छोड़ो फिर बायें से लो और दायें से छोड़ो। ऐसा १० बार करो। दोनों नथुनों से श्वास समान रूप से चलने लगेगा। फिर दायें नथुने से श्वास लिया और १ से सवा मिनट या सुखपूर्वक जितना रोक सकें अंदर रोका, फिर बायें से छोड़ दिया। कितना भी अर्जीण, अम्लपित्त, मंदाज्ञि, वायु हो, उनकी कमर दूट जायेगी। ५ से ज्यादा प्राणायाम नहीं करना। अगर गर्मी हो जाय तो फिर नहीं करना या कम करना।

- क्रषिप्रसाद, जून २०१८

चैतन्य से संबंध कट जाने पर चाहे
कितने ही बड़े सुखी घर में पला हो या
गरीब घर में पला हो, इस शरीर की कोहे
कीमत नहीं। -पूज्य बापूजी

५. कहानियाँ

२. भक्त शिरोमणि गोरखामी तुलसीदासजी

(संत तुलसीदासजी जयंती : २७ जुलाई)

प्रयाग के पास यमुना के दक्षिण राजापुर नाम का एक ग्राम है। उन दिनों वहाँ एक आत्माराम दूबे नाम के सरयूपारीण ब्राह्मण रहते थे। वे अपने गाँव में प्रतिष्ठित, बुद्धिमान, सदाचारी और शास्त्रों में श्रद्धा रखनेवाले थे। उनका गोत्र पाराशर था। उनकी धर्मपत्नी का नाम हुलसी था। वह बड़ी पतिव्रता थी।

बारह महीने तक गर्भ में रहने के पश्चात् संवत् १५५४, श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन उन्होंने दम्पत्ती से श्री तुलसीदासजी का जन्म हुआ।

पन्द्रह सै चौबन विषै कालिन्दी के तीर ।

श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी धरेत शरीर ॥

उस समय अभुक्तमूल नक्षत्र चल रहा था। पिता को बड़ी प्रसन्नता हुई। पुत्र के जन्म का उत्सव मनाया जाने लगा। दासी ने आकर कहा : 'महाराज ! चलिए, घर में आपकी बुलाहट है। बड़ी अद्भुत घटना घटी है। नवजात शिशु तनिक भी रोया नहीं, उलटे उसके मुँह से 'राम' शब्द निकला। देखने पर मालूम हुआ कि इसके - मुँह में बत्तीसों दाँत मौजूद हैं। पाँच वर्ष के जैसे लगते हैं, वैसा ही वह मालूम पड़ता है। मैं बूढ़ी हो गयी परंतु आज तक मैंने ऐसा बालक नहीं देखा। स्त्रियों में इस बात की बड़ी चर्चा हो रही है। कोई कुछ कहती है, कोई कुछ। आप चलकर समझाइये और बच्चे की माँ की चिंता मिटाइये।'

दूबेजी घर में गये। प्रसूतिघर के दरवाजे पर खड़े होकर उन्होंने नवजात शिशु को देखा। उनके मन में बड़ा खेद हुआ। उन्होंने सोचा कि यह मेरे पूर्वजन्म का पाप है, जिसके कारण ऐसा बालक हुआ है।

भाई-बन्धु, ज्योतिषी सब इकट्ठे हुए। विचार हुआ। अन्त में यह तय हुआ कि यदि यह बालक तीन दिन तक जीवित रह जाय तो इसके संबंध में फिर सोचा जायेगा। सब लोग चले गये। तीन दिन बीतने पर आये।

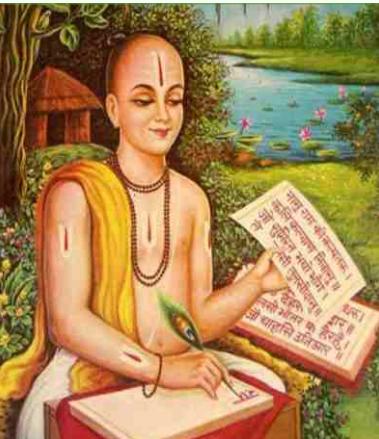
श्रावण शुक्ल दशमी की रात में एकादशी लग गयी थी। एकादशी के साथ ही हुलसी के हृदय में यह सद्बुद्धि आयी। उसने अपनी दासी से कहा कि : 'प्यारी सखी ! अब मेरे प्राणपखेर उड़ना चाहते हैं। तुम मेरे इस कलेजे के टुकड़े को लेकर अपने सास-ससुर के गाँव हरिपुर चली जाओ। तुम मेरे लल्ला का पालन-पोषण करना। भगवान तुम्हारा भला करेंगे।

नहीं तो मेरे घर के लोग इस नह्ने-से निरपराध शिशु को फेंक देंगे। सखी ! यह बात किसी को पता न होने पाये। तुम रातोंरात चली जाओ।'

यह कहकर हुलसी ने अपने बच्चे को उसकी गोद में दे दिया और अपने सब गहने भी दे दिये। दासी बच्चे को लेकर चली गयी और एकादशी के प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में हुलसी ने अपना शरीर त्याग दिया।

उस दासी का नाम चुनियाँ था।

जब वह बालक को लेकर अपने घर पहुँची और सारी बात अपनी सास को कह सुनायी, तब सास ने उसकी बड़ी प्रशंसा की और घर की कलोरी गौ का दूध पिलाकर बच्चे का लालन-पालन करने को कहा। चुनियाँ बड़े प्रेम से बच्चे को सँभालने लगी। बालक साढ़े पाँच वर्ष के लगभग हो गया। वह चलने लगा, तो तली बोली से बोलने लगा। इसी समय चुनियाँ की मृत्यु हो गयी। उसकी सास ने



बालक के पिता के पास संदेश भेजा कि आकर ले जायें। उन्होंने उत्तर दिया कि ‘ऐसे बालक को लेकर मैं क्या करूँगा। जन्मते ही उसकी माता मर गयी। पालन करनेवाली दासी भी नहीं जी सकी। वह अभाग है। वह जिये या मरे, मुझे उसकी परवाह नहीं।’ बालक अनाथ हो गया। उसे रखनेवाला कोई नहीं था। वह द्वार-द्वार पर भटकता फिरता था। बालक की ऐसी अवस्था देखकर माता पार्वती को बड़ी दया आयी। वे ब्राह्मणी का वेष धारण करके प्रतिदिन आर्ती और उसे भोजन करा जातीं। लोगों को बड़ा आश्चर्य होता कि यह कौन स्त्री है जो प्रतिदिन इस बालक को खिला जाती है। इस प्रकार दो वर्ष और बीत गये।

भगवान् शिव ने पार्वती का व्रत देखकर यह सोचा कि अब इस बालक के भोजन, वस्त्र विद्याध्ययन आदि का प्रबन्ध कर देना चाहिये।

उन्होंने राम-शैल के प्रिय पर रहनेवाले श्री अनंतानंदजी के प्रिय शिष्य श्री श्रीनरहरिनंदजी को आज्ञा दी। श्रीनरहरिजी ने श्रीशिवजी की आज्ञा का पालन किया। बालक ढूँढ़कर उसका नाम ‘रामबोला’ रख दिया। गाँव के लोगों से पूछकर वे रामबोला को अयोध्या ले गये। वहाँ विद्वान् ब्राह्मणों की उपस्थिति में एक यज्ञ हुआ और संवत् १५६१, माघ शुक्ल पंचमी, शुक्रवार को उसका यज्ञोपवीतसंस्कार किया गया। बिना सिखाये ही बालक रामबोला ने गायत्री-मंत्र का उच्चारण किया। वहाँ के सभी विद्वान् आश्चर्यचकित हो गये।

नरहरि स्वामी ने वैष्णवों के पाँच संस्कार करके राममंत्र की दीक्षा दी। अवध में ही उन्होंने १० महीनों तक हनुमान टीले पर निवास किया। उन दिनों बालक रामबोला अपने गुरु से विद्याध्ययन करते। उनकी धारण-शक्ति अद्भुत थी। वे अधिकांश समय गुरु की सेवा में ही बिताते थे। जो एक बार में सुन लेते, वह कंठस्थ हो जाता। एक दिन पैर दबाते समय, उन्होंने जन्म से लेकर अब तक की कथा कह सुनायी। उनका बालचरित्र सुनकर गुरुजी का हृदय द्रवित हो गया, करुणा की धारा उमड़ पड़ी, आँखों से आँसू

बहने लगे। उनकी उस प्रेम-दशा का वर्णन नहीं किया जा सकता। गुरुजी ने बालक रामबोला का नाम ‘तुलसीदास’ रख दिया।

- ② प्रश्नोत्तरी : १. बिना सिखाये बालक रामबोला ने कौन-से मंत्र का उच्चारण किया था ?
- २. रामबोला राममंत्र की दीक्षा किसने दी ?
- ३. रामबोला का नाम उनके गुरुजी ने क्या रखा ?

२. स्वामी विवेकानंदजी की गुरुभक्ति

विश्वविख्यात स्वामी विवेकानंदजी अपना जीवन अपने गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। श्री रामकृष्ण परमहंस के शरीर-त्याग

के दिनों में वे अपने घर और कुटुम्ब की नाजुक हालत की परवाह किये बिना, स्वयं के भोजन की परवाह किये बिना गुरुसेवा में सतत हाजिर रहते। गले के कैंसर के कारण रामकृष्ण परमहंस का शरीर अत्यंत रुग्ण हो गया था। गले में से थूक, रक्त, कफ आदि निकलता था। इन सबकी सफाई वे खूब ध्यान से करते थे।

एक बार किसी शिष्य ने श्री रामकृष्ण की सेवा में लापरवाही दिखायी तथा घृणा से नाक-भौंहें सिकोड़ी। यह देखकर विवेकानंदजी को गुस्सा आ गया। उस गुरुभाई को पाठ पढ़ाते हुए और गुरुदेव की प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते हुए वे उनके बिस्तर के पास रखी रक्त-कफ आदि से भरी थूकदानी उठाकर पूरी पी गये।

गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के



प्रताप से ही वे अपने गुरु के शरीर की और उनके दिव्यतम आदर्शों को लोगों तक पहुँचाने की उत्तम सेवा कर सके। गुरुदेव को वे समझ सके, स्वयं के अस्तित्व को गुरुदेव के स्वरूप में विलीन कर सके। समग्र विश्व में भारत के अमूल्य आध्यात्मिक खजाने की महक फैला सके।

स्वामी विवेकानंद गुरुभक्ति के विषय में कहते हैं : “स्वानुभूति ज्ञान की परम सीमा है, वह ग्रन्थों से नहीं प्राप्त हो सकती। पृथ्वी का पर्यटन कर चाहे आप सारी भूमि पदाक्रांत कर डालें, हिमालय, काकेशस, आल्प्स पर्वत लाँघ जायें, समुद्र में गोता लगाकर उसकी गहराई में बैठ जायें, तिब्बत देश देख लें या गोबी (अफ्रीका) का मरुस्थल छान डालें, परंतु स्वानुभव का यथार्थ धर्म-रहस्य इन बातों से, श्रीगुरु के कृपा-प्रसाद के बिना त्रिकाल में भी ज्ञात नहीं होगा। इसलिए भगवान की कृपा से जब ऐसा भाग्योदय हो कि श्रीगुरु दर्शन दें, तब सर्वांतःकरण से श्रीगुरु की शरण लो। उन्हें ऐसा समझो जैसे यहीं परब्रह्म हों, उनके बालक बनकर अनन्य भाव से उनकी सेवा करो, इससे आप धन्य होंगे। ऐसे परम प्रेम और आदर के साथ जो श्रीगुरु के शरणागत हुए, उन्हींको और केवल उन्हींको सच्चिदानंद प्रभु ने प्रसन्न होकर अपना परम भक्ति दी है और अध्यात्म के अलौकिक चमत्कार दिखाये हैं।

② प्रश्नोत्तरी : १. स्वामी विवेकानंदजी के गुरुदेव का नाम क्या था ?

२. स्वामी विवेकानंदजी ने गुरुभाई को गुरुदेव की वस्तु के प्रति प्रेम का पाठ पढ़ाने के लिए क्या किया ?

३. आनंद की अदृष्ट शक्ति

गुरु को केवल तत्त्व मानकर उनकी देह का अनादर करेंगे तो हम निगुरे रह जायेंगे। जिस देह में वह तत्त्व प्रकट होता है वह देह भी चिन्मय आनंदस्वरूप हो जाती है। समर्थ रामदास का आनंद नामक एक शिष्य था। वे उसको बहुत प्यार करते थे। यह देखकर अन्य शिष्यों को ईर्ष्या होने लगी। वे सोचते थे कि हम भी शिष्य हैं। हम भी गुरुदेव की सेवा करते हैं, फिर भी गुरुदेव हमसे ज्यादा आनंद को प्यार करते हैं।

ईर्ष्यालु शिष्यों को सीख देने के लिए एक बार

समर्थ रामदास ने एक युक्ति की। अपने पैर में एक कच्चा आम बाँधकर ऊपर कपड़े की पट्टी बाँध दी। फिर पीड़ा से चिल्लाने लगे : ‘पैर में फोड़ा निकला है... बहुत पीड़ा करता है... आह... ! ऊह... !’

कुछ दिनों में आम पक गया और उसका पीला रस बहने लगा। गुरुजी पीड़ा से ज्यादा कराहने लगे। उन्होंने सब शिष्यों को बुलाकर कहा : ‘अब फोड़ा पक गया है, फट गया है। उसमें से मवाद

निकल रहा है। मैं पीड़ा से मरा जा रहा हूँ। कोई मेरी सेवा करो यह फोड़ा अपने मुँह से कोई चूस ले तो पीड़ा मिट सकती है।’

सब शिष्य एक-दूसरे का मुँह ताक ने लगे।

बहाने बना-बनाकर सब एक-एक करके खिसकने लगे। शिष्य आनंद को पता चला। वह तुरंत आया और गुरुदेव के पैर को अपना मुँह लगाकर फोड़े का मवाद चूसने लगा। गुरुदेव का हृदय भर आया। बोले : ‘बस आनंद बस ! मेरी पीड़ा चली गयी।’

मगर आनंद ने कहा : ‘‘गुरुजी ! ऐसा माल मिल रहा है फिर छोड़ें कैसे !’’

ईर्ष्या करनेवाले शिष्यों के चेहरे फीके पड़ गये बाहर से फोड़ा दिखते हुए भी भीतर से आम का रस है। ऐसे ही बाहर से अस्थि-मांसमय दिखनेवाले गुरुदेव के शरीर से आत्मा का रस टपकता है। महावीर स्वामी के समक्ष बैठनेवालों को पता था कि क्या टपकता है महावीर के सान्निध्य में बैठने से ! संत कबीर के ईर्दिगिर्द बैठनेवालों को पता था, श्रीकृष्ण के साथ खेलनेवाले ज्वालों और गोपियों को पता था कि उनके सान्निध्य में क्या बरसता है !



अभी तो विज्ञान साबित करता है कि हर व्यक्ति के स्पंदन (वायब्रेशन) उसके इर्दगिर्द फैले रहते हैं। लोभी और क्रोधी के इर्दगिर्द राजसी-तामसी स्पंदन फैले रहते हैं और संत-महापुरुषों के इर्दगिर्द आनंद-शांति के स्पंदन फैले रहते हैं।

- ② प्रश्नोत्तरी : १. समर्थ रामदासजी का सबसे प्रिय शिष्य कौन था ?
 २. ईच्छालु शिष्य को सीख देने के लिए समर्थ रामदासजी ने क्या लीला की ?
 ३. संत-महापुरुषों के स्पंदन कैसे होते हैं ?

४. अमरदासजी ने पाया अमर पद

- पूज्य बापूजी

सिख धर्म के आदिगुरु नानकदेवजी के बाद उनकी गद्दी पर बैठे थे गुरु अंगददेव। अंगददेवजी की बेटी बीबी अमरो की शादी जिसके साथ हुई थी, उसके चाचा का नाम था अमरदास। अमरदास भगवान को तो मानते थे, हर साल तीर्थयात्रा करते और गंगा में नहाने भी जाते थे लेकिन उन्हें सद्गुरु की दीक्षा नहीं मिली थी। २१ बार गंगा-स्नान किये। बड़ी उम्र के तो हो गये लेकिन बड़े-में-बड़ी समझ देनेवाले किसी सद्गुरु के नहीं हो पाये थे।

एक बार अमरदास की मुलाकात गंगा-स्नान की यात्रा के दौरान एक पंडित से हो गयी।

अमरदास उन्हें अपने घर में ले आये और भोजन करने के लिए कहा।

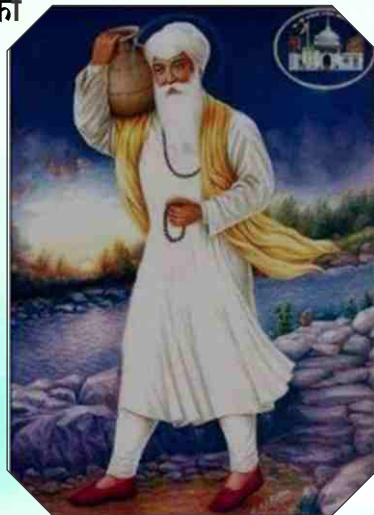
पंडित ने पूछा : “तुम्हारे गुरु कौन हैं, सद्गुरु कौन हैं ?”

अमरदास : “मेरी गुरु तो गंगामाई हैं।”

“यह तो ठीक है लेकिन तुम्हारे सद्गुरु कौन हैं ?”

“सद्गुरु... ?”

पंडित : “ऐसे महापुरुष जिनको सत्य का अनुभव हुआ हो, जो अंतर्यामीरूप से हमारी योग्यता जानकर



हमें मंत्र दे देते हैं, उनको ‘सद्गुरु’ बोलते हैं। कोई मनुष्य सीधा नरक से आता है, कोई सीधा पश्योनि से तो कोई सीधा स्वर्ग से आता है। अपने विषय में मनमानी साधना करेंगे तो मन कभी इधर ले जायेगा, कभी उधर ले जायेगा। जैसे विद्यार्थी की योग्यता देखकर शिक्षक ठीक ढंग से पढ़ाता है और विद्यार्थी तत्परता रखता है तो वह विद्वान हो जाता है, ऐसे ही शिष्य की योग्यता कौन-से ढंग की है यह अनुभव करनेवाले सद्गुरु मंत्रदीक्षा देते हैं और शिष्य आज्ञापालक है तो वह शिष्य सत्तशिष्य होकर सत्य का अनुभव कर लेता है। तुमने अपने जीवन में सद्गुरु नहीं किये ? तुम्हारे पास किन्हीं सद्गुरु का मंत्र नहीं है क्या ?”

बोले : “यह सब तो मेरे को पता नहीं था।”

पंडित : “अरे ! मेरे को पहले बताते तो तुम्हारे घर ठहरता ही नहीं।”

पंडित ने अपना झोली-झंडा लपेटा और चलता बना लेकिन अमरदास को मानो वह एक तीर मार गया। उन्होंने गुरु की खोज शुरू कर दी। वे गंगामाई को पुकारते कि ‘माँ ! मेरा अगर एक भी स्नान स्वीकार किया हो तो तू ही बता मैं किसको गुरु करूँ, कहाँ जाऊँ ?’

समय बीता। एक बार बीबी अमरो ‘जपुजी साहिब’ का पाठ कर रही थी। वह तो रोज पाठ करती थी लेकिन उस दिन उसका पाठ असर कर गया। अमरदास बीबी अमरो के चरणों में जा बैठे, मानो वहाँ परमात्मा की कोई व्यवस्था काम रही थी। जो बीज विकसित होने को होता है उसको पृथ्वी भी मदद करती है, जल भी मदद करता है, हवाएँ, वातावरण, खाद - सभी मदद करते हैं लेकिन जो बीज सेंका हुआ है उसको जलवायु, हवाएँ, तेज क्या मदद करेंगे ? ऐसे ही जो योग्य है उस व्यक्ति को प्रकृति भी मदद करती है। अमरदास ने भजन किया था तो मदद हो गयी,

प्रेरणा मिल गयी । ‘जपुजी साहिब’ के पाठ को सुनकर अमरदासजी का रोआँ-रोआँ जागृत हो गया।

उन्होंने बीबी अमरो को कहा : “अंगददेवजी गुरु हैं, तेरे पिता हैं । तुम मेरे लिए उनसे थोड़ी सिफारिश कर दो, मुझे अपना सिख (शिष्य) बना लें, सीख दे दें रब को पाने की ।”

बीबी अमरो ने कहा : “वे मेरे पिता थे जब तक वे गुरुगद्वी पर नहीं बैठे थे, अभी वे मेरे पिता नहीं हैं, गुरुजी हैं । मैं प्रार्थना कर सकती हूँ लेकिन पुत्री की नाई आग्रह नहीं कर सकती हूँ । आप-हम उनके पास चलते हैं, अगर प्रार्थना स्वीकार हो जायेगी तो आपको दीक्षा मिल जायेगी ।”

गुरु अंगददेवजी ने अमरदासजी की योग्यता के अनुसार उनको साधना बता दी । अमरदासजी को अमर पद की प्राप्ति थोड़े समय में ही हो गयी । ६२ साल की उम्र में दीक्षा ली और ऐसे योग्य हो गये कि गुरु अंगददेवजी ने उनसे कहा : “अब तो गुरु नानकदेव की इस पवित्र गद्वी को सँभालने के लिए

आप जैसा कोई पुरुष नहीं है ।” गुरु अंगददेवजी ने अमरदासजी को गद्वी सौंपी । गुरु नानकजी की गद्वी पर तीसरे गुरु अमरदासजी हुए ।

② प्रश्नोत्तरी : १. सद्गुरु किन्हें कहते हैं ?

२. बीज विकसित होने लगता है तो उसे कौन-कौन मदद करता है ?

३. योग्य व्यक्ति को कौन मदद करता है ?

४. गुरुनानकजी के बाद उनकी गुरुगद्वी पर कौन बैठा ?

हे विद्यार्थी ! आगे बढ़ो ...

मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती हैं ।

स्वप्न के परदे निगाहों से हटाती हैं ॥

हौसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर ।

ठोकरें इन्सान को चलना सिखाती हैं ॥

४. पूज्य बापूजी के जीवन प्रेरक प्रसंग

बालक आसुमल की कैसी परहितपरायणता !

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है कि “किसी भी बहाने किसी गरीब, दुःखी व्यक्ति के आँसू पोंछ कर देखना, आपके हृदय में प्रसन्नता भर जायेगी ।”

अपने संबंधियों-मित्रों के दुःख से दुःखी तो सारी दुनिया होती है पर जिनसे कोई संबंध नहीं उनके दुःख से तो वे ही व्यथित होते हैं जो सारे विश्व को अपना कुटुम्ब मानते हैं, प्राणिमात्र को आत्मवत् अनुभव करते हैं । पूज्य बापूजी के जीवन के ऐसे कई प्रसंग हैं जिनसे पता चलता है कि आपके

हृदय में जीवमात्र के प्रति करुणा, दया और प्रेम के

भाव बचपन से ही विद्यमान थे ।

बचपन में बालक आसुमल जहाँ रहते थे वहाँ पास की सोसायटी में एक शिव-मंदिर था । उनका यह नियम था कि भगवान शिव को जल चढ़ाये बिना वे खाना तो दूर, दूध तक नहीं लेते थे ।

एक दिन आसुमलजी रोज की भाँति पूजन करने जा रहे थे ।

घर से ५०-६० के दम आगे निकले ही थे कि एक व्यक्ति सड़क के किनारे पड़ा मिला । आसुमलजी ने अपना पूजा का सामान एक



तरफ रखा और उस व्यक्ति को हिलाया-डुलाया । भगवान के लिए जो जल लाये थे उसीसे उसके चेहरे पर छींटे लगाये तो वह होश में आया । हालचाल पूछा तो बोला : “बाबूजी ! भूख लगी है ।”

आसुमलजी शिवजी के लिए जो दूध लाये थे वह उन्होंने उस जवान को पिला दिया और घर जाकर माँ से मीठी रोटियाँ बनवाकर लाये तथा उसको खिलायीं ।

उस व्यक्ति ने बताया कि “मैं बिहार का रहनेवाला हूँ । मेरे पिताजी का स्वर्गवास हो गया है । मुझे नौकरी नहीं मिल रही, कुछ कमाता नहीं हूँ इसलिए चाचा ने मुझे घर से निकाल दिया है । धंधे की तलाश में आया था । बाबूजी ! भीख माँगने की तो हिम्मत नहीं होती है, धंधा मिलता नहीं है तो चार दिन ऐसे ही सड़कों पर घूमता रहा । रात को फुटपाथ पर सोता तो पुलिसवाले मारते थे । भूख के कारण चक्कर आ गया तो गिर गया था ।”

आसुमलजी ने अपने जेब-खर्च के पैसों में से कुछ पैसे निकालकर उसे दे दिये और रिक्शे में बैठाकर विदा किया ।

उसी समय उनके अंतर में आवाज आने लगी कि ‘आज तुमने मेरी असली पूजा की है । अब तुम्हें मेरा प्रसाद प्राप्त होगा । अब मैं तुम्हें पूरा-का-पूरा मिलूँगा, मैं तुम होऊँगा और तुम मैं (मुझ परमात्मस्वरूप) हो जाओगे ।’

② प्रश्नोत्तरी : १. पूज्य बापूजी हृदय में प्रसन्नता भरने का क्या उपाय बताते हैं ?

२. पूज्य बापूजी का बचपन में क्या नियम था ?

३. बालक आसुमलजी ने शिवजी के असली पूजा करने का फल कैसे प्राप्त किया ?

जो मेरे प्रभु को अच्छा लगे वही कहूँगा

पूज्य बापूजी बताते हैं कि “हम जब घर में रहते थे तो हमारे भाई हमको डाँटते थे कि “तुम किसी जगह शादी-बारात में क्यों नहीं जाते ? अच्छा, एक काम करो, अभी मामा के बेटे की शादी है । कुछ और नहीं

खाना, केवल आइसक्रीम खाकर आ जाना।”

मैंने कहा : “मैं नहीं खाता।”

“अरे भाई ! उनको अच्छा लगेगा ।”

“उनको अच्छा लगेगा इसलिए मैं ऐसे ही जा सकता हूँ परंतु मैं वहाँ कुछ खाऊँगा नहीं।”

मेरे भाई ने मुझे खूब डाँटा।

मैंने कहा :

“उनके अच्छा लगे और अपन नरकों में जायें ऐसी बेवकूफी मुझे नहीं करना । जो मेरे प्रभु को अच्छा लगेगा वही मुझे अच्छा लगेगा ।”

भाई ने डाँटा : “बड़ा आया प्रभु का भगत !”

हम मुँह चढ़ाकर चले गये और मंदिर में जा के बैठ गये । तीन घंटे बाद जब मामा के बेटे की शादी हो गयी तो आ गये ।

बाद में तो वे ही लोग पूनम-ब्रतधारी बन गये और हम जहाँ भी जाते वहाँ दर्शन करने को आ जाते । अगर हम उनको रिझाते रहते, बारात में जाते और आइसक्रीम खाते तो वे तो रीझते नहीं और दुनिया को रिझाते-रिझाते हम ही मर जाते । हमको बचपन से शादी-पार्टी में जाने की रुचि नहीं थी, हमें तो सत्संग अच्छा लगता था, जप अच्छा लगता था ।”

③ प्रश्न : १. बालक आसुमलजी को शादी-पार्टी में जाने की अपेक्षा कहाँ जाना अच्छा लगता था ?

२. पूज्य बापूजी के बाल्यकाल के इस प्रसंग से आपको क्या सीख मिली ?

बचपन में ऐसी तड़प !

रमेशभाई बताते हैं कि घर में अलग से एक छोटा-सा पूजा का कमरा था, जिसमें बापूजी ४-४.३० बजे स्नान आदि करके ध्यान-भजन करने

बैठ जाते और ९.३०-१० बजे तथा कभी-कभी तो ११ बजे बाहर निकलते फिर दूध पीते थे। तब करीब १०-११ वर्ष की उम्र रही होगी।

भगवद्ध्यान, भगवन्नाम-जप आदि में रुचि रखनेवाले आसुमल का मन संसारी खेल या मौज-मस्ती में नहीं रमता था। इस नन्ही उम्र में अक्सर वे एक पीपल के पेड़ के नीचे या

किसी शांत वातावरणवाले सात्त्विक स्थान पर घंटों-घंटों ध्यान में बैठे रहते थे। इतने छोटे बालक को ध्यान में बैठे देख लोग आश्चर्य करते हुए कहते : ‘अरे ! यह कि सका बच्चा है? इतना छोटा बालक ! कितनी देर से बैठा है और कितना गहरा ध्यान लगा है ! भक्ति का कैसा रंग लगा है अभी से !’

भगवन्नाम-संकीर्तन के साथ प्रभातफेरी निकलती तो बालक आसुमल एक वाद्य बजाते हुए ईश्वरीय मस्ती में खो जाते।

जब सीताजी मंदिर में पूजन करने जातीं तो माता पार्वती की फूलमाला गिर पड़ती।

**बिन्य प्रेम बस भई भवानी । खसी माल
मूरति मुसुकानी ॥ (रामायण)**

देव-प्रतिमा से फूल गिरना ईश्वर की प्रसन्नता का संकेत माना जाता है। जब आसुमल मंदिर में जाते थे तो कभी-कभी देवमूर्ति से ईश्वरीय प्रसन्नता के प्रकटीकरण के रूप में फूल या बेलपत्र गिर जाते थे, मानो वे बालक की साधना-भक्ति से प्रसन्न हों।

प्रश्नोत्तरी : १. बालक आसुमलजी सुबह कितने बजे नियम करने बैठ जाते थे और कितने बजे वापस आते थे ?

२. बालक आसुमलजी मंदिर जाते तो वहाँ ईश्वर का क्या संकेत मिलता था ?



संतसेवी बालक आसुमल

पूज्यश्री बचपन से ही संतों का बहुत आदर करते थे। सद्गुरु मिलने से पहले कोई संत आते तो उनका सत्संग सुनने जाते। अहमदाबाद में एक संत पथारे तो आसुमल ने अम्माजी को कहा : “माँ! मैं भी चलूँगा दर्शन करने आपके साथ।”

अम्माजी : “बेटा ! जब तक मैं सत्संग सुनूँगी तब तक तुम बैठोगे ?”

“हाँ, माँ ! मैं भी पूरा सत्संग सुनूँगा।”

“तो चलो बेटे !”

“माँ ! संतश्री के लिए प्रसादरूप में हम क्या लेकर चलेंगे ?”

“बेटा ! देशी गाय का दूध ले लो।”

बालक आसुमल ने एक पात्र में गोदुंध लिया और अपने छोटे-छोटे हाथों से लेकर सत्संग में गये। सत्संग-श्रवण की कैसी प्यास ! संत-सेवा का कैसा भाव ! कैसा आदर !!

बच्चों में ऐसे संस्कार डालने चाहिए कि उनको सत्संग के प्रति रुचि हो, भगवान् व भगवत्प्राप्त संतों-महापुरुषों के प्रति आदर और प्रेम हो। सत्संगी बच्चे स्वयं तो तरते हैं, परिवार, समाज और देश को भी तारनेवाले होते हैं।

प्रश्नोत्तरी : १. पूज्य बापूजी बचपन से किनका आदर करते थे ?

२. बच्चों में कैसे संस्कार कैसे डालने चाहिए ?

गुरु क्यों गुरु हैं?

गुरु अपने विश्वासी शिष्यों को तीनों गुणों से पार करके शिव तत्व का बोध कराते हैं। इसीलिए गुरु कहलाते हैं। सद्गुरु की पूजा परमात्मा शिव की ही पूजा है। अज्ञानरुपी बंधन से छूटना ही जीवमात्र के लिए साध्य पुरुषार्थ है। जो ब्रह्मवेत्ता हैं वे ही जीव को बंधन से छुड़ा सकते हैं।

१. मानस पूजन (गुरुपूजन पर विशेष)

गुरुपूर्णिमा अर्थात् गुरु के पूजन का पर्व । किंतु 'आज सब लोग अगर गुरु को नहलाने लग जायें तिलक करने लग जायें, हार पहनाने लग जायें तो यह संभव नहीं है लेकिन घोड़शोपचार की पूजा से भी अधिक फल देनेवाली मानसपूजा करने से तो भाई ! स्वयं गुरु भी नहीं रोक सकते । मानसपूजा का अधिकार तो सबके पास है ।

महिमावान् श्री सद्गुरुदेव के पावन चरणकमलों का घोड़शोपचार से पूजन करने से साधक-शिष्य का हृदय शीघ्र शुद्ध और उन्नत बन जाता है । मानसपूजा इस प्रकार कर सकते हैं :

मन-ही-मन भावना करो कि हम गुरुदेव के श्रीचरण धो रहे हैं... सप्ततीर्थों के जल से उनके पादारविन्द को स्नान करा रहे हैं । खूब आदर एवं कृतज्ञतापूर्वक उनके श्रीचरणों में दृष्टि रखकर... श्रीचरणों को प्यार करते हुए उनको नहला रहे हैं... उनके तेजोमय ललाट पर शुद्ध चंदन का तिलक कर रहे हैं... अक्षत चढ़ा रहे हैं... अपने हाथों से बनायी हुई गुलाब के सुंदर फूलों की सुहावनी माला अर्पित करके अपने हाथ पवित्र कर रहे हैं... हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर अपना अहंकार उनको समर्पित कर रहे हैं... पाँच कर्मन्द्रियों, पाँच ज्ञानेन्द्रियों एवं ज्यारहवें मन की चेष्टाएँ गुरुदेव के श्रीचरणों में समर्पित कर रहे हैं...

**कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा,
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृते स्वभावात् ।
करोमि यद्यस्कलं परस्मै,
नारायणायेति समर्पयामि ॥**

'शरीर से, वाणी से, मन से, इन्द्रियों से, बुद्धि से

अथवा प्रकृति के स्वभाव से जो-जो करते हैं वह सब समर्पित करते हैं । हमारे जो कुछ कर्म हैं, हे गुरुदेव ! सब आपके श्रीचरणों में समर्पित हैं । हमारा कर्तापन का भाव, हमारा भोक्तापन का भाव आपके श्रीचरणों में समर्पित है ।'

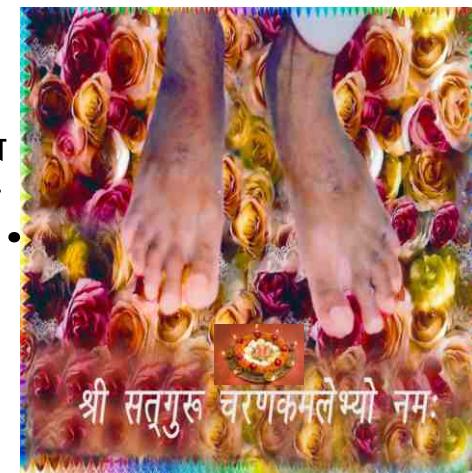
इस प्रकार ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु की कृपा को, ज्ञान को, आत्मशांति को हृदय में भरते हुए, उनके अमृतवचनों पर अङ्ग बनते हुए अंतर्मुख होते जाओ... आनंदमय बनते जाओ... ॐ आनंद ! ॐ आनंद !! ॐ आनंद !!

इस प्रकार शिष्य मन-ही-मन अपने दिव्य भावों के अनुसार अपने सद्गुरुदेव का पूजन करके गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व मना सकता

है । करोड़ों जन्मों के माता-पिता, मित्र-सम्बन्धी जो न दे सके, सद्गुरुदेव वह हँसते-हँसते दे डालते हैं ।

हे गुरुपूर्णिमा ! हे व्यासपूर्णिमा ! तू कृपा करना... गुरुदेव के साथ मेरी श्रद्धा की डोर कभी ढूटने न पाये... मैं प्रार्थना करता हूँ, गुरुवर ! जब तक है जिंदगी, आपके श्रीचरणों में मेरी श्रद्धा बनी रहे । वह भक्त ही क्या जो तुमसे मिलने की दुआ न करे ?

भूल प्रभु को जिंदा रहूँ कभी ये खुदा न करे ?
लगाया जो रंग भक्ति का उसे छूटने न देना ।
गुरु तेरी याद का दामन कभी छूटने न देना,
हर साँस में तुम और तुम्हारा नाम रहे ।
प्रीति की यह डोरी कभी ढूटने न देना,
श्रद्धा की यह डोरी कभी ढूटने न देना ।
बढ़ते रहें कदम सदा तेरे ही इशारे पर,



गुरुदेव ! तेरी कृपा का सहारा छूटने न देना ।
 सच्चे बनें और तरक्की करें हम,
 नसीबा हमारा अब खूब न देना ?
 देती है धोखा और भुलाती है दुनिया,
 भक्ति को अब हमसे लूटने न देना ।
 प्रेम का यह रंग हमें रहे सदा याद,
 दूर हो हम तुमसे यह कभी घटने न देना ?
 बड़ी मुश्किल से
 भरकर रखी है करुणा
 तुम्हारी...

बड़ी मुश्किल से
 थामकर रखी है
 श्रद्धा - भक्ति
 तुम्हारी...

कृपा का यह पात्र
 कभी फूटने न देना ।

लगाया जो रंग
 भक्ति का उसे छूटने
 न देना, प्रभुप्रीति की
 यह डोर कभी ढूटने न देना ?

आज गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर हे गुरुदेव !
 आपके श्रीचरणों में अनंत कोटि प्रणाम... आप जिस
 पद में विश्रांति पा रहे हैं, हम भी उसी पद में विश्रांति
 पाने के काबिल हो जायें... अब आत्मा-परमात्मा से
 जुदाई की घड़ियाँ ज्यादा न रहें... ईश्वर करे कि
 ईश्वर में हमारी प्रीति हो जाय... प्रभु करे कि प्रभु के
 नामे गुरु-शिष्य का संबंध बना रहे...

- क्रष्णप्रसाद, अंक - १२७, २००३

* गृहकार्य : * नीचे दी गयी ८ बातें बच्चों
 को बतायें और गुरुपूर्णिमा के दिन करने के लिए
 कहें।

१. गुरुपूर्णिमा के दिन स्नान करके सर्वप्रथम
 माता-पिता और घर के बड़े एवं गुरुजनों का आशीर्वाद
 प्राप्त करें।

२. अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश ही
 मुक्ति दिलाता है इसलिए आज के दिन ज्ञानरूपी

प्रकाश के कारक सूर्य को जल जखर चढ़ाये । ज्ञान
 ही सच्चा मित्र होता है जो कभी साथ नहीं छोड़ता
 इसलिए सूर्य को जल चढ़ाते समय ॐ मित्राय नमः
 मंत्र का जप करें ।

३. इस दिन गुरुदेव का मानस पूजन करें । (इस
 दिन गुरुदेव का मानस पूजन करने से वर्षभर के सभी
 व्रत-पर्वों का पुण्यफल फलित होता है ।)

४. गुरुपूनम के दिन सम्भव हो तो दर्शन के लिए
 आश्रम जायें ।

५. घर पर
 'हमारे पूज्य गुरुदेव
 का स्वास्थ्य, आयु,
 आरोग्य, यश,
 कीर्ति, खूब-खूब
 बढ़े' - ऐसा संकल्प
 करके जप करें ।

६. विद्यालाभ
 मंत्र का जप जरूर



* जप-विधि : विद्या-लाभ के लिए मंत्र :
 विद्यालाभ व अद्भुत विद्वत्ता की प्राप्ति का
 उपाय

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनि सरस्वति मम
 जिह्वाग्रे वद वद ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा ।'

- इस मंत्र को केवल गुजरात और महाराष्ट्र के
 लोग ५ जुलाई को रात्रि ११:०२ से ११:४५ बजे
 तक या ६ जुलाई को प्रातः ३ बजे से रात्रि ११:१२
 तक १०८ बार जप लें और फिर मंत्रजप के बाद उसी
 दिन रात्रि ११ से १२ बजे के बीच जीभ पर लाल
 चंदन से 'ह्रीं' मंत्र लिख दें । जिसकी जीभ पर यह मंत्र
 इस विधि से लिखा जायेगा उसे विद्या-लाभ व अद्भुत
 विद्वत्ता की प्राप्ति होगी ।

७. आज के दिन बच्चों को चने की दाल और
 गुड़ गाय माता को खिलाना चाहिए इससे विद्या के
 क्षेत्र में तेजी से सफलता प्राप्त होती है ।

८. विद्यार्थियों को विद्या ग्रहण करने के लिए तीक्ष्ण



और सुक्ष्म बुद्धि चाहिए इसके लिए ब्रह्मचर्य का पालन बहुत जरूरी है । इसलिए इस दिन गुरुजी के सामने दीपक जलाकर ध्यान करें ।

* बच्चों की 'सदगुरु की महिमा' पर वक्तृत्व स्वर्धा लें ।

2. जैसा बोलेंगे, वैसा पायेंगे / जैसी करनी वैसी भरनी

दो-दो बच्चों की चार जोड़ियाँ सामने बुलाएँ । एक-दूसरे की ओर मुँह कर उन्हें खड़ा करें । पहले सभी जोड़ियाँ में से एक-एक बच्चे को कुछ कृति, अभिनय करना है । सामने खड़े बच्चे को की गई कृति तथा अभिनय की नकल करना है । ताली बजाना, रोना, हँसना, नाचना, मुँह चिढ़ाना, झगड़ने का अभिनय (और चिढ़ने का) ऐसी विविध कृतियाँ की जा सकती हैं ।

पहला बच्चा विभिन्न प्रकार की कृतियाँ करता है । सामनेवाला बच्चा कृतियों की नकल करता है । एक मिनट के बाद सामनेवाले बच्चे को अवसर मिलता है । इस बार उसके द्वारा की कृतियों की नकल पहला बच्चा करेगा ।

इसमें चार में से कम-से-कम तीन जोड़ियाँ के बारे में ऐसा ही होता है कि पहले बच्चे ने जो कृतियाँ की और सामनेवाले को नकल करनी पड़ी वे ही कृतियाँ सामनेवाला भी पहले से करवाता है । एक मिनट पूरा होने के बाद सब बच्चों को नीचे बिठा दें । गतिविधि का उद्देश्य समझायें ।

शिक्षक : बच्चों हमने अभी देखा कि दूसरे बच्चे को जब अवसर मिला तो उसने पहले बच्चे की कृतियाँ दोहरायीं । यह मानव स्वभाव है । जैसे दूसरे हमसे व्यवहार करते हैं वैसा ही व्यवहार हम उनसे करते हैं । हम जैसा व्यवहार अन्यों से करते हैं वैसा ही व्यवहार अन्य हम से करते हैं । महाबलेश्वर में 'ईको पॉईंट' नाम का एक स्थान है । वहाँ खड़ेहोकर हम जैसी ध्वनि करेंगे वैसी ही प्रतिध्वनि



हम सुन पायेंगे । हम 'राम' कहें तो 'राम' ऐसी ही प्रतिध्वनि लौटती है, हमें 'राम' शब्द ही सुनने को मिलेगा । मानव मन भी इस 'ईको पॉईंट' जैसा ही है । 'जो बोओगे, सो काटोगे' इस कहावत के अनुसार हम अन्यों से जैसा व्यवहार करेंगे वैसे ही अन्य हमसे व्यवहार करेंगे ।

हम मीठा बोलेंगे तो लोग भी हमसे मीठा ही बोलेंगे और अगर हम गालियाँ देंगे तो हमें भी गालियाँ और गलत शब्द ही सुनने को मिलेंगे ।

कहा भी गया है कि 'बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय' । हम दूसरों से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करते हैं हमें भी दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए । हम दूसरों से मृदु वचन कहें, उनकी सहायता करें, सबसे प्रेम-भाव रखें तो लोग भी हमसे प्रेम-भाव रखेंगे, यह हमें भूलना नहीं चाहिए ।

3. सावधानी ही साधना है...

इस गतिविधि में घर के हर सदस्य को भाग लेना है । एक बर्फ का टुकड़ा लेना है । पहला सदस्य बर्फ के टुकड़े को अपने हथेली पर १० सेकंड के लिए रखें । उसके बाद वही बर्फ का टुकड़ा दूसरे सदस्य की हथेली पर रख दें । फिर १० सेकंड के बाद दूसरा सदस्य उसी टुकड़े को तीसरे सदस्य की हथेली पर रखें । यही क्रम १०-१० सेकंड के अंतराल पर अंतिम सदस्य तक चलता रहेगा । क्या अंतिम सदस्य को वही-का-वही टुकड़ा वैसे का वैसा मिला ? नहीं ? क्यों ?

सूक्ष्म विचार - जैसे हम एक बर्फ का टुकड़ा एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे, तीसरे के चौथे और इस प्रकार आगे पास करते जाते हैं, तो उसका स्वरूप पहले जैसा नहीं रहता । अंत तक आते-आते उसका आकार आदि बदल जाता है । इसी प्रकार व्यवहार में की जानेवाली बातों के संबंध में भी ऐसा ही है । वाया-वाया एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे तक पहुँचते-पहुँचते अर्थ का अनर्थ बन जाता

है। किसी की सुनी-सुनाई बातों में या बहकावे में आकर किसी के प्रति एक दृष्टिकोण तय कर लेना, यह ठीक नहीं। इसलिए सावधानी से व्यवहार करना चाहिए।

४. हमारा विराट स्वरूप

सामग्री : एक दर्पण

शिक्षक : बच्चों भगवद्‌गीता कहते हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट स्वरूप दिखाया था। आज आपको आपके ही विराट स्वरूप का दर्शन करवायेंगे।

बच्चों को दर्पण दिखाते हुए...

इस दर्पण में देखिये, आपको अपना विराट स्वरूप दिखेगा। आप कहेंगे कि हम तो रोज ही दर्पण देखते हैं किंतु हमें कभी भी अपना विराट स्वरूप क्यों नजर नहीं आया? यह कोई जादुई आईना है क्या? नहीं, जादुई आईना नहीं है बल्कि जादुई आपकी दृष्टि हो सकती है। अर्जुन को विराट स्वरूप दिखाने से पहले श्रीकृष्ण ने उन्हें दिव्य दृष्टि प्रदान की थी। दिव्यदृष्टि अर्थात् विचार करने का, सोचने का नया दृष्टिकोण! हम सदैव अपने चेहरे व वस्त्रों की सुंदरता निहारने के लिए दर्पण देखते हैं किंतु हमने कभी ऐसा विचार किया है क्या कि दर्पण में जिस स्वयं को मैं देख रहा हूँ उसका मूल्य कितना हो सकता है? सुपर कॉम्प्युटर जैसा मस्तिष्क, वीडियो कैमरे जैसी आँखें, रडार जैसे कान, जैसा कोई यंत्र बना ही नहीं वैसी अद्भुत नाक, प्रयोगशाला के समान जीभ, मिक्सर ग्राईन्डर जैसे दाँत, क्रेन जैसे दो हाथ, एकझौकट फैन जैसे फेफड़े, पम्पिंग स्टेशन जैसा हृदय, भट्टी जैसा पेट और भी अनेक बहुमूल्य और निरंतर कार्य करनेवाले यंत्र हमें प्राप्त हुए हैं। इस प्रत्येक मशीन का मूल्य यदि हमने आँका तो वह करोड़ों में होगा अर्थात् हम सभी करोड़पति हैं। हैं कि नहीं, यह हमारा विराट स्वरूप! किंतु इस अमूल्य शरीर की स्वच्छता, उत्तम रख-रखाव, इसका उचित ध्यान हम रखते हैं क्या? व्यायाम और पोषक आहार देकर इसे

सदृढ़ बनाने और इसकी कार्यक्षमता बढ़ाने का प्रयत्न हम करते हैं क्या?

परमेश्वर ने मुक्तहस्त से कितना प्रेमपूर्वक हमें इतना कुछ दिया है। अपनी इस शरीर संपदा को अक्षय बनाये रखने के लिए और सही तरीके से इसकी क्षमतायें बढ़ाने के लिए हमें भी परिश्रम करने की आवश्यकता है, निरंतरता बनाये रखने की जरूरत है।

आपको पूज्यश्री के विभिन्न सत्संगों, विद्यार्थी शिविरों, बाल संस्कार के न्द्रों में ॐ कार गुंजन भगवन्नाम जप, श्वासोश्वास की गिनती, सूर्यनमस्कार, आसन, प्राणायाम, प्रार्थना सिखाई गयी हैं इसको नियमित रूप से करें। यह सब यदि आपने किया तो



आपका स्वरूप केवल शारीरिक दृष्टि से नहीं बल्कि बौद्धिक और मानसिक दृष्टि से भी विराट हुए बिना नहीं रह सकता। शिवि में बताई गई अच्छी बातों को भूलें नहीं। किसी भी परिस्थिति में उनके क्रियान्वन में विघ्न न पड़ने दें। गुरुदेव आपको बहुत विराट बनायें यही उनके श्रीचरणों में प्रार्थना है।

जो ब्रह्मज्ञानियों का दर्शन करता है उसको करोड़ों तीर्थ-स्नान करने का फल मिलता है। जो गुरु की विद्या को पचाता है वह सर्वोपरि विद्या का धनी हो जोता है। जो ब्रह्मज्ञानी के दैवी कार्य की सेवा करता है उसका निष्काम कर्म-योग फलित होने लगता है, भवितयोग फलित होने लगता है, भवितयोग भरपूर होने लगता है, ज्ञानयोग चमकने लगता है।

९. पहेलियाँ

१. कभी तोड़कर पृथ्वी का तल पिघली थातु,
शिलायें ढक लेती धरती को, करती हैं विनाश लीलायें ।

धुआँ और लपटें सब उसके साथ-साथ आते हैं ।

बोलो इस भीषण घटना को हम सब क्या कहते हैं ?

२. पृथ्वी की छाया, पूनम के चंदा पर जब पड़ती,
तब धरती पर और गगन में घटना अद्भुत घटती ।

और उस समय मधुर चांदिनी कहीं कैद हो जाती ।

बोलो, बोलो यह घटना है जग में क्या कहलाती ?

३. प्रथम कटे तो जंग बन जाऊँ । इसके बिना मुक्ति नहीं पाऊँ ॥

अंत कटे तो तीर बन जाऊँ । ईश, गुरु चरणों में समाऊँ ॥

४. सात जन्मों की दरिद्रता मिटाता, परमात्मा की प्राप्ति कराता ।

त्रिदेव इसीसे पाते सत्ता-सामर्थ्य, ध्यान से परमात्मा साकार होता ॥

५. एक प्राणी ऐसा, जिसकी दूम पर पैसा ।

सर पर है ताज भी, बादशाह जैसा ॥

६. पेड़ नहीं, पक्षी नहीं, दूध देय पर गाय नहीं ।

तीन नेत्र पर शंकर नहीं, जटा धरे पर जोगी नहीं ॥

७. सोचो और हल निकालो

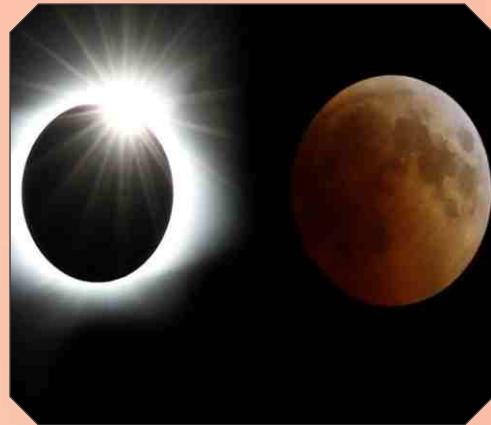
उमेश अपनी बेटी के लिए खिलौना लेने एक दुकान पर गया । उस समय दुकान का मालिक नहीं था । नौकर ने उसे खिलौना ५० रुपये में दिया । थोड़ी देर बाद दुकान का मालिक आ गया । नौकर ने ५० रुपये मालिक को दिये तो मालिक ने कहा : “वह खिलौना तो ४५ रुपये का था । ५ रुपये तुरंत लौटाकर आ, वे अभी बाजार में ही होंगे ।”

नौकर ने उमेश को ३ रुपये लौटा दिये और २ रुपये अपनी जेब में रख लिये । उमेश ने घर पर अपनी पत्नी को खिलौने की कीमत ४७ रु. ($50 - 3 = 47$) बतायी । २ रुपये नौकर ने बचा लिये । कुल रुपये हुए $47 + 2$ अर्थात् ४९ तो बचा हुआ एक रुपया कहाँ गया ?

८. गणित के शिक्षक ने कक्षा के ९ छात्रों को प्रश्न पूछा और कहा : “मेरे पास सौ रुपये से कम कुछ रुपये थे जिनके अंकों का योग १८ था । जितने रुपये थे उस संख्या के योग के बराबर रुपये मैंने दान कर दिये । शेष बचे रुपये कुल रुपयों की संख्या के दोनों अंकों के गुणनफल की संख्या के बराबर थे । वही शेष राशि आप सभी छात्रों को बराबर-बराबर बाँटने जा रहा हूँ । बताओ मेरे पास कितने रुपये थे और आप लोगों को बाँटने के बाद कितने बचेंगे ?

पहेली के उत्तर : १. ज्वालामुखी २. चन्द्रग्रहण ३. शरण ४. अँकार ५. मोर ६. नारियल ७. वास्तव में देखें तो १ कहीं गया नहीं है, केवल ‘-’ का ‘+’ किया तो पूरा गणित बिगड़ गया ।

८. ९९ रुपये थे । संख्या ९९ में अंकों का योग $9+9 = 18$, जो कि दान कर दिये । अब शेष रुपये = $99 - 18 = 81$ रुपये ।



तपः सु सर्वेषु एकाग्रता परम तपः । सब तपों में एकाग्रता परम तप है ।

कोई रूपया खोया नहीं था । केवल भ्रम था । ऐसे ही यदि जो संसार सच्चा नहीं है (-), उसमें सत्यबुद्धि (+) करते हैं तो परिणाम ऐसा उलटा दिखने लगता है कि एक सुखस्वरूप परमात्मा जो कहीं खोया नहीं है, वह खोया हुआ-सा लगने लगता है । इससे व्यक्ति भ्रम में उलझकर सुख, शांति, निश्चितता से दूर हो जाता है । सद्गुरु के ज्ञान से जब हम संसार की सत्यता (+) को मिटा देते हैं (-करते हैं), तब पता चलता है कि परमात्मा कहीं खोया नहीं था । **दूरे न च सुदुर्लभः ।** वह न तो दूर है और न अत्यंत दुर्लभ ही है ।

पाया कहे सो बाँवरा, खोया कहे सो कूर ।

पाया खोया कुछ नहीं, ज्यों-का-त्यों भरपूर ॥

९. ३ रु. नौकर ने उमेश को लौटाये तो उसे $50 - 3 = 47$ रु. में खिलौना पड़ा और नौकर ने २रु. बचा लिये तो $47 - 2 = 45$ रु. हुए ।

९ छात्रों में ९-९ रुपये बाँटेंगे तो कुल रुपये $9 \times 9 = 81$ रुपये । शेष रुपये $= 81 - 81 = 0$ अर्थात् शेष कुछ नहीं बचेगा ।

१०. वर्ण पहेली

२. खेल-खेल में बढ़ायें ज्ञान

‘गुरुभक्तियोग’ पुस्तक पर आधारित नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर वर्ग-पहेली में ढूँढ़िये ।

- (१) ईश्वर-साक्षात्कार केवल स्वप्रयत्न से ही नहीं हो सकता, उसके लिए अत्यंत आवश्यक है।
- (२) ईश्वर का अनुभव करने के लिए सबसे सरल, सचोट और सलामत मार्ग है ।
- (३) गुरुकृपा केवल यंत्रवत् प्रणाम से नहीं, गुरु के ... को जीवन में उतारने से ही प्राप्त हो सकती है ।
- (४) भक्तों के लिए भगवान् हमेशा किस रूप में पथ-प्रदर्शक बनते हैं ?
- (५) गुरु के आशीर्वाद का खजाना खोलने के लिए गुरुचाबी क्या है ?
- (६) जो गुरु की निंदा करता है वह कौन-से नरक में गिरता है ?
- (७) गुरु में तथा शास्त्रों में जो श्रद्धा होती है, वह किससे शीघ्र नष्ट हो जाती है ?
- (८) गुरुभक्ति जगाने के लिए कौन-से २ गुण जरूरी हैं ?

गु	ढ	गु	रु	कृ	पा	आ	स	ल	ध
ई	रु	न	ओ	उ	ष	ब	गु	प	रौ
श्व	श	से	ञ्ज	त्त	त	श	रु	क्ष	र
र	न	न	वा	म	प	त	भ	छ	व
म	त	य	या	शि	ल	ष	कित	क	न
ग	ओ	अ	स	ष्य	त	र	यो	ठ	र
कु	ध	ऐ	उ	प	दे	श	ग	ख	क
त	सं	य	ण	ल	द	म	र्ज्र	ज	ष
ढ	आ	ग	स	छ	स	द	गु	रु	द
ख	न	म्र	ता	आ	ज्ञा	पा	ल	न	ख

(उत्तर : १. गुरुकृपा २. गुरुभक्तियोग ३. उपदेश

४. सद्गुरु ५. गुरुसेवा ६. रौरव नरक

७. कुसंग ८. नम्रता, आज्ञापालन)



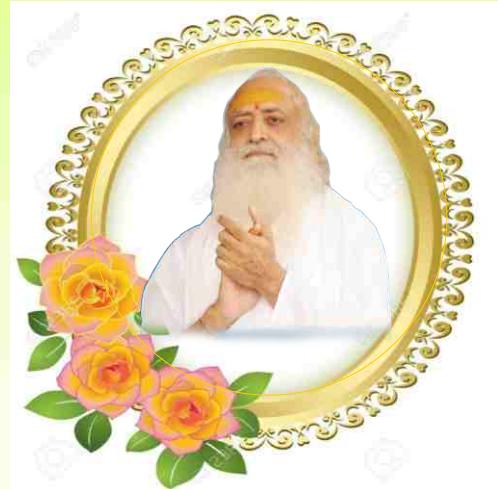
2. बुद्धि की कसरत

उत्तर : १. ज्ञान, २. सदाचार ३. ब्रह्मचर्य ४. धर्मरक्षा ५. वीरता ६. व्रत-पालन ७. सत्य-भाषण ८. लोक-उपकार ९. गुरुसेवा १०. संस्कृति-सेवा ११. ब्रह्मनिष्ठा



३. गुरु चरण रज शीश धरी हृदय रूप विचार । प्रश्नों की भरमार हैं, हो जाओ तैयार ॥

१. देश विभाजन के बाद बालक आसुमल परिवार सहित सर्वप्रथम भारत में कौन-सी जगह आये थे ?
 २. पूज्य बापूजी के सद्गुरु कौन थे ?
 ३. कैसी स्थिति पाने के बाद कोई कार्य शेष नहीं बचता ?
 ४. “मरे छः शत्रु स्थिति पाई” - ये छः शत्रु कौन से हैं ?
 ५. “एक दृष्टि देखे सभी” - इस वाक्यांश का क्या अर्थ है ?
 ६. मोह किसे नहीं ठग सकता ?
 ७. पूज्य बापूजी सिद्धपुर में कितने वर्ष रहे ?
 ८. पूज्य बापूजी को आत्मसाक्षात्कार कब हुआ ?
 ९. पूज्य बापूजी ने कौन-सी भाषा की शिक्षा पाकर अपनी साधना बढ़ाई ?
 १०. हेलिकॉप्टर वाली दुर्घटना कब और कहाँ हुई ?
- इनके उत्तर बड़े आसान जो बताये वो बुद्धिमान ।



उत्तर : १. अहमदाबाद (गुज.) २. साँई लीलाशाहजी ३. ब्राह्मी स्थिति पाने के बाद ४. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य ५. सबमें एक आत्मवेव/परमेश्वर को देखना अर्थात् सबको आत्मदृष्टि से देखना ६. जिसने ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर ली उसे... ७. तीन वर्ष ८. आसोज सुद दो दिवस संवत् २०२१
९. संस्कृत १०. २९ अगस्त, २०१२ गोधरा (गुज.)

४. द्विमान लगाओ, उत्तर पाओ

निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिये गये चार विकल्पों में से सही उत्तर पहचानिये ।

- (१) संत कबीरजी की साखियों का संकलन किस नाम से प्रसिद्ध है ? (बीजक, अभंग, गुरुवाणी, गीता)
- (२) वह कौन पराक्रमी भारतीय वीर था जिसने यूनानी सम्राट सिकंदर के सेनापति सेल्यूक्स को युद्ध में बुरी तरह हराया था ?
(समुद्रगुप्त, पुरु, चन्द्रगुप्त मौर्य, आम्भिर)
- (३) ‘मन चंगा तो कठौती में गंगा’ यह कथन किन संत का है ? (रविदासजी, सूरदासजी, कबीरजी, तुलसीदासजी)
- (४) किन्होंने अपने प्यारों के मन में यह बात अच्छी तरह बिठा दी थी कि एक सिख सवा लाख मुगल सैनिकों के बराबर है ?
(हरि सिंह नलवा, गुरु गोविंद सिंह, वीर वैरागी, रणजीत सिंह)
- (५) तुलसीदासजी को गुरुमंत्र की दीक्षा किन्होंने दी थी ?
(स्वामी रामानंदजी, स्वामी रामतीर्थजी, स्वामी अखंडानंदजी, नरहरि महाराज)
- (६) वह कौन वीर बालक था जो ६ वर्ष की अवस्था में सिंहों, व्याघ्रों को पकड़कर खींच लाता था, उनकी पीठ पर चढ़ जाता और आश्रम के समीपवर्ती वृक्षों से बाँध देता था ? (भीष्म, अर्जुन, शकुंतला-पुत्र भरत, एकलव्य)

उत्तर : १. बीजक २. चन्द्रगुप्त मौर्य ३. रविदासजी
४. गुरु गोविंद सिंह ५. नरहरि महाराज ६. शकुंतला पुत्र भरत

११. हँसते-खेलते पार्यं ज्ञान



१.डॉक्टर (मरीज से) : 'यह लो दवाई । दो चम्मच सुबह, दो चम्मच दोपहर और दो चम्मच रात में ले. लेना ।'

मरीज : "डॉक्टर साहब ! मुझ पर दया कीजिये, मैं एक गरीब आदमी हूँ । मेरे पास दवाई खाने के लिए इतने सारे चम्मच नहीं हैं ।

सीख : बात नासमझी से परेशान नहीं होना चाहिए ।

२.राम : अरे ! भाई श्याम अगर बिना दाँतोंवाला कुत्ता काटे तो क्या करना चाहिये ?

श्याम : आसान है, बिना सुई वाला इंजेक्शन लगाना चाहिए....

सीख : व्यर्थ की चर्चा में समय न गवायें ।

३.अंग्रेजी बोलने का भूत जब दिमाग पर चढ़ता है तो इस प्रकार का माहौल बन जाता है ।

शिक्षक : "कल तुम कोचिंग नहीं आये थे ?"

विद्यार्थी : "वो कल हमारे यहाँ ब्यूटीफुल ट्रेजेडी थी न इसीलिए नहीं आ पाया ।"

शिक्षक : "ब्यूटीफुल ट्रेजेडी मतलब ?"

विद्यार्थी : "मतलब सुंदरकांड था ।"

सीख : हमें हमेशा अपने राष्ट्रीय भाषा पर गर्व होना चाहिए । किसीका अनुकरण करके हम किसी के गुलाम क्यों बनें !

४.एक व्यक्ति का बच्चा खो गया । उसने पड़ोसी से पूछा कि 'मेरा बेटा खो गया है । कल से उसका कोई पता नहीं है । क्या करूँ, आप कोई सलाह दीजिए ?

पड़ोसी : "बेटा खो गया है तो साहब आप गूगल पर सर्च करो ।"

व्यक्ति : "उससे क्या होगा ?"

पड़ोसी : "गूगल पर सर्च करने से सब कुछ मिल जाता है ।"

सीख: जो चीज जहाँ है वहीं खोजने से मिलेगी दूसरी जगह नहीं मिलेगी । ऐसे ही ईश्वर का ज्ञान तो सद्गुरु के सत्संग से मिलेगा दूसरी जगह नहीं मिलेगा ।

५.योगेश (अपने दोस्त से) कल मैंने एक आदमी को दरिया में झूबते हुए बाहर निकाल लिया ।

सुरेश : "फिर क्या हुआ ?"

योगेश : "फिर वापिस दरिया में फेंक दिया ।"

सुरेश : "तुमने ऐसा क्यों किया ?"

योगेश : "कहावत है नेकी कर दरिया में डाल ।"

सीख : हमें किस काम का अहंकार नहीं करना चाहिए । सब कुछ भगवान का दिया हुआ है ।



१२. खेल

१. एकाग्रता बढ़ाओ, सफलता पाओ...

साम्रगी : आश्रम का कोई भी साहित्य या कोई भी ग्रंथ, कागज, पेन्सिल/पेन ।

इस खेल में बच्चों की संख्यानुसार ४-५ समूह बना दें। प्रत्येक समूह को १-१ किताब एवं १-१ अक्षर दें। जैसे - किसी समूह को 'क' अक्षर दिया गया तो वह समूह किताब से 'क' से आरम्भ होनेवाले वाक्य ढूँढ़कर कागज पर लिखना है। जैसे - क्या कभी आपने किसी गरीब या असहाय की मदद की है? काँटे हों चाहे कलियाँ हों, हमको चलते ही जाना है। कभी नदी के तट पर तो कभी घने वन में ध्यानस्थ होकर बैठ जाते। किसी भी देश की सच्ची सम्पत्ति संतजन ही होते हैं। ग - गुरु ही ब्रह्म हैं। गुरु ही विष्णु हैं। गुरुदेव ही शिव हैं तथा गुरुदेव ही साक्षात् साकार स्वरूप आदिब्रह्म हैं। गुरुदेव को नमस्कार करता हूँ। वाक्य इस प्रकार हो सकते हैं। ऐसे सभी समूह को अलग-अलग शब्द दें। समयअवधि रहेगी ५ मिनट। ५ मिनट में जो समूह सबसे ज्यादा वाक्य निकाल कर लिखेगा वह विजेता होगा।

२. खेल-खेल में भगवन्नाम जप...

बच्चों के दो समूह बनायें। सभी बच्चे शिक्षक की ओर मुँह करके खड़े रहे। शिक्षक दोनों समूह के बीचों-बीच खड़े रहे। शिक्षक के दायीं ओर वाला समूह दायें हाथ का और बायीं ओर वाला समूह बायें हाथ का आदेश मानेगा। शिक्षक दोनों हाथ ऊपर कर खेल शुरू करेंगे। शिक्षक जब बायाँ हाथ ऊपर से नीचे ले आये या कोई भी क्रिया करें तो बायें हाथ समूह को ताली बजाकर ॐ... ॐ... ॐ... बोलना है वैसे ही दायें हाथ के समूह को ताली बजाकर राम-राम-राम बोलना है। शिक्षक एक साथ दोनों हाथों से क्रिया भी कर सकते हैं।

जो समूह सही क्रिया करेगा वह विजेता होगा।



३. करो विचार, बनो महान...

एक लाईन में बच्चों को बिठा दें। बच्चों को हाथ को थाली मानकर जिस प्रकार भोजन करते हैं वैसे हाथ से खाते हुए यह क्रिया करनी है। शिक्षक को खाने की चीजों के नाम लेने हैं उसमें से कौन-सी वस्तु खानी है और कौन-सी नहीं। खानेवाली चीजों में प्रतिक्रिया करते हुए खाना है और ॐ बोलना है। नहीं खानेवाली चीजों में राम-राम-राम बोलना है। जो बच्चा गलत क्रिया करेगा वह बाहर हो जायेगा। आखिर तक जो बच्चा एकाग्रतापूर्वक खेलेगा वह विजेता होगा।

४. हँसते-खेलते भगायें अवगुण, भरें सद्गुण

शिक्षक बच्चों को क्रमशः ५ बातें याद करवायेंगे उनके अंक क्रमांकों के साथ, जिनका संबंध नीचे दिये गये अंकों से है : १. कार्टून, सीरीयल, फिल्में आदि नहीं देखने चाहिए।

२. असत्य व कटु वचन नहीं बोलने चाहिए।

३. गाने, निंदा आदि नहीं सुनने चाहिए।

४. नकारात्मक विचार नहीं करने चाहिए।

५. स्वास्थ्य को नष्ट करनेवाली चीजों (मांस, मछली, अंडा, ब्रेड, पनीर, पीजा, बर्गर, कोको-कोला, पेप्सी आदि) का सेवन नहीं करना चाहिए।

शिक्षक जब बोलेंगे '१' तब बच्चों को आँखों पर हाथ रखने हैं। '२' बोलने पर मुँह पर, '३' बोलें तो कानों पर, '४' बोलें तो सिर पर और '५' बोलें तो पेट पर हाथ रखने हैं।

शिक्षक आगे-पीछे करके अंक बोलते जायेंगे और बच्चों को अंकों के अनुसार सही क्रिया करनी है। जो बच्चे गलत करेंगे वे बाहर होते जायेंगे। आखिरी तक जो बच्चा रहेगा वह विजेता होगा।

अपने स्वरूप को जानो, तन धन अपना मत मानो ।
मोही बनकर आये थे, प्रेमी होकर ही जाओ ॥
इच्छाओं के त्यागी बन, प्रभु के ही अनुरागी बन ।
ऐ पथिक ! कहीं भी रहकर तुम परमानंद मनाओ ॥

- संत पथिकजी महाराज (ऋषिप्रसाद, सितम्बर २०१६)

3. आपके उपकार के ऋण को...

आपके उपकार के ऋण को चुकाया जा नहीं सकता ।
ज्ञान ऐसा दिया तुमने, भुलाया जा नहीं जा सकता ॥
यदि गुरुवर नहीं मिलते, मेरा मुश्किल गुजारा था ।
मुखातिब हूँ बुलंदी को, मैं एक दूटा सितारा था ॥
दिलों पर आप हो आसीन, हटाया जा नहीं सकता ।
आपके उपकार के ऋण को, चुकाया जा नहीं सकता ॥
बड़ी ऊँची गुरुकिरण, बहुत छोटी जुबां मेरी ।
तुम्हें गुरुवर समझ पाऊँ, ये हस्ती है कहाँ मेरी ॥
आपकी रहमत को शब्दों में, सुनाया जा नहीं सकता ।
आपके उपकार के ऋण को, चुकाया जा नहीं सकता ॥
मेरे सिर पर सदा हो हाथ, तुम्हारी ही इनायत का ।
मुझे हो शौक दुनियाँ में, तुम्हारी ही इबादत का ॥
बिना गुरुदेव के जीवन, सजाया जा नहीं सकता ।
आपके उपकार के ऋण को, चुकाया जा नहीं सकता ॥

आपकी जुबान - : यह पाठ्यक्रम आपका है । इसे सार्थक बनाने के लिए सभी साधकों, बाल संस्कार सोवाधारियों शिक्षकों व विद्यार्थियों से उनके अनुभव, सुझाव पाठ्यक्रम के आध्यात्मिकीकरण और उपयोगीकरण के लिए आमंत्रित है । यह पाठ्यक्रम सभी साधक सेवाधारी अपने-अपने क्षेत्र के सभी साधकों तक अवश्य पहुँचाये । अगले महीने की पाठ्यक्रम की सीरिज व अन्य गतिविधियाँ सुझाव हमें इस नम्बर पर अवश्य भेजें ।

बाल संस्कार विभाग, संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती, अहमदाबाद - ५

दूरभाष : 079-61210749/50/51

**whatsapp - 7600325666, email - bskamd@gmail.com, website :
www.balsanskarkendra.org**